International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 12-10-2025, Accepted: 11-11-2025, Published: 26-11-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 106-109

अभिमन्यु अनत की कहानियों में व्यक्त गिरमिटिया समुदाय की पीड़ा और संघर्ष

ज्योति झा
शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

सारांश
मॉरीशस के प्रवासी साहित्यकारों में अभिमन्यु अनत का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके साहित्य में प्रवासी गिरमिटिया समुदाय के जीवन संघर्ष, आशा – निराशा, अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष, अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान को बचाए रखने के लिए संघर्ष आदि की मुखर अभिव्यक्ति हुई है। अभिमन्यु अनत का साहित्य भारत और मॉरीशस के संबंधों को जोड़ने के लिए एक पुल का काम करता है। उन्होंने अपनी कृतियों के द्वारा भारत से साहित्यिक – सांस्कृतिक संबंध को मजबूत बनाने में अधिक बल दिया है। जिससे भारत और मॉरीशस के बीच सामाजिक और राजनीतिक संबंधों में मजबूती आई है। मॉरीशस में भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को मजबूती से स्थापित करने में अभिमन्यु अनत का महत्वपूर्ण योगदान है। यदि यह कहा जाए कि मॉरीशस के हिंदी साहित्य में अनत जी का एक संपूर्ण युग है, तो गलत नहीं होगा।
अभिमन्यु अनत के विपुल साहित्य में प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष के विविध पक्षों की अभिव्यक्ति हुई है। जिसमें गोरे मालिकों के बागानों में दासों की तरह शोषण तथा उनके अत्याचारों को सहते, गिरमिटिया मज़दूरों की दयनीय स्थिति का सजीव चित्रण इनके साहित्य में देखने को मिलता है। खेत – खलिहान में दिन– रात परिश्रम करते इस समुदाय के लोगों की हताशा– निराशा आदि की मुखर अभिव्यक्ति इनके साहित्य में हुई है। इनकी कहानियों में आधुनिक जीवन की जटिलताएं तथा उनसे आने वाले सामाजिक परिवर्तनों और उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण हुआ है, साथ ही यूरोपीय सभ्यता तथा संस्कृति के समक्ष वे भारतीय सभ्यता और संस्कृति को रखते हैं। वे अपनी रचनाओं द्वारा

मूल शब्द: प्रवासी साहित्य, गिरमिटिया समुदाय, टूटा पहिया, मातमपुरसी, सांस्कृतिक मूल्यबोध

परिचय

भारतीय सभ्यता– संस्कृति, रीती –रिवाज, सामाजिक – पारिवारिक मूल्यों के संरक्षण की बात करते हैं। वे अपनी रचनाओं के संबंध में कहते हैं कि 'मेरे ऊपर जो प्रभाव पड़ा है, वह मॉरीशस में शोषित लोगों के जीवन का है। मैंने गरीबी, अभाव, शोषण को बड़ी नजदीकी से देखा है और इसी की प्रतिक्रिया में मेरे भाव शब्दों के साथ बाहर आए और कहानी उपन्यास आदि बनते चले गए'। इसीलिए इनकी कहानियाँ गिरमिटिया समुदाय के जीवन के ईर्द –गिर्द ही घूमती है। इसी को इस लेख में समझने का प्रयास किया गया है

यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि आज का युग सूचना और संचार क्रांति का युग है, तकनीकी क्रांति का युग है। संचार और तकनीकी के साधनों ने सम्पूर्ण विश्व के समुदायों को आपस में जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसके माध्यम से हम सब एक दूसरे की संस्कृति, समाज, आचार – विचार, व्यवहार, साहित्य, राजनीति, अर्थ नीति आदि से परिचित है | इसी सूचना और संचार क्रांति ने प्रवासी भारतीयों से हमारे परिचय को और प्रगाढ़ बनाया है। भारत से बहार प्रवासी भारतीयों की क्या स्थिति है ? उनके संघर्ष क्या है ? उनकी समस्याएँ क्या है ? किसी देश में रह रहे भारतीय के बारे में हम जैसा सोचते है, क्या सब कुछ वैसा ही है ? हम सब सोचते है कि कोई भी देश जैसा हमें टेलीविजन या फिल्मों में दिखता है, वैसा ही है। सब कुछ चमकीला और सुन्दर। वहां के लोग सुखी और सम्पन्न, जो भारतीय वहां है, उन्हें भी सभी सुख सुविधाएं उपलब्ध है। कहीं कोई समस्या नहीं है।

लेकिन ऐसा नहीं है, यह आभासी माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी सच है। जो वास्तविकता से कोसो दूर है। यदि प्रवासी लोगों की वास्तविक स्थिति को जानना हो तो, इसका सबसे प्रामाणिक दस्तावेज 'प्रवासी साहित्य' है। जिसमें कई तरह के अनुभव समाहित है। जिसमें प्रवासी भारतीयों के अस्तित्व, अस्मिता और जीवन संघर्षों के अनगिनत अनुभूतियाँ लिपिबद्ध है। ऐसा इसलिए है कि "जब हम अपनी स्थानीयता से विलग होकर अंतर्राष्ट्रीय धरातल पर खड़े होते हैं, तो सबसे पहले जो यक्ष प्रश्न हमारे सामने उपस्थित होता है । वह यही है कि हमारी अस्मिता क्या है ? जब हमारे सामने पहचान का संकट खड़ा होता है। तो हमें अपनी जड़ों का ध्यान आता है और अहसास होता है कि उससे अलग जाकर हमारी कोई विशेष पहचान शेष नहीं बचेगी"[1]। प्रवासी भारतीयों के सामने अपनी पहचान को विदेशी भूमि पर बचाए रखना सरल नहीं है। क्योंकि वहाँ पहले से स्थानीय समाज और संस्कृति का प्रभुत्व होता है। जो निश्चित रूप से उस देश में बहार से गये लोगों के सामने, अपनी अस्मिता को, अपनी पहचान को बचाए रखने में गंभीर चुनौती प्रस्तुत करती है। यही संघर्ष प्रवासी लेखकों की रचनात्मकता की भाव भूमि तैयार करता है। क्योंकि "जब स्थानीय एवं विजातीय यथार्थ के साथ हमारी चेतना का द्वंद्व होने लगता है, सांस्कृतिक मूल्यों के सामने नितांत समसामयिक परिस्थितियों के संघात में जनमी नई मानसिकता विकसित होने लगती है, जब उस नई मानसिकता से जनमी संवेदना साहित्य में अभिव्यक्ति पाने लगती है, तब प्रवासी – लेखन की उचित और नैसर्गिक भूमिका बन जाती है"[2]। समस्त प्रवासी साहित्य में यही द्वंद्व अभिव्यक्ति की आधार भूमि है।

गिरमिटिया समुदाय की पीड़ा और संघर्ष

मॉरीशस, प्रवासी साहित्य रचना की बहुत ही सशक्त भूमि है। अभिमन्यु अनत का संबंध इसी सशक्त भाव भूमि से है। अभिमन्यु अनत ने गिरमिटिया समुदाय की पीड़ा, संघर्ष और गोरे मालिकों के द्वारा किये जा रहे अत्याचारों को, अपनी लेखनी में प्रमुखता से अभिव्यक्त किया है। इन्होंने हिंदी भाषा के लगभग सभी विधाओं में अपने अनुभव, अपने समाज के अनुभवों को व्यक्त किया है। इन्होंने उपन्यास, कहानी, कविता, निबंध, यात्रा विवरण, जीवनी, संस्मरण, दैनिकी लेखन, आत्म कथा, अनुवाद आदि विधाओं में साहित्य सृजन का कार्य किया है। इस विपुल साहित्य सृजन के पीछे, वह अपने समाज के लोगों पर होने वाले अत्याचार तथा

कष्टों को प्रेरणा स्वरूप स्वीकार करते है। वे यह स्वीकार करते है कि "मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा इतिहास की यातना, उससे उपलब्ध आम आदमी की वह दयनीय स्थिति और उसका उस स्थिति के सामने कभी न टूटने का संकल्प रहा है"[3]। अभिमन्यु अनत के सम्पूर्ण साहित्य में इतिहास की यातना, इस यातना को सहते हुए आम आदमी की दयनीय स्थिति और इस दयनीय स्थिति में भी अपनी भाषा और संस्कृति से, अपने भारतीय संस्कारों से जुड़े रहने का प्रण, इनके साहित्य के केंद्र में है।

इन्हीं भावों की अभिव्यक्ति अभिमन्यु अनत की कहानियों में हुई है। इनके द्वारा लिखित कहानियों कि संख्या लगभग डेढ़ सौ से भी ज्यादा है । जिनका प्रकाशन मॉरीशस तथा भारत के विविध पत्र – पत्रिकाओं में हुआ है। इनके कहानी संग्रह जो प्रकाशित है – 'खामोशी के चीत्कार', 'इनसान और मशीन', 'वह बीच का आदमी', 'एक थाली समुन्दर', 'अभिमन्यु अनत की आरंभिक कहानियाँ', 'बवंडर बाहर भीतर', 'अब कब आएगा यमराज', तथा 'मातमपुरसी'। 'खामोशी के चीत्कार' का प्रकाशन 1976 में हुआ। जिसमें अभिमन्यु अनत ने उन्नीसवीं शताब्दी में भारत से ले जाए गये प्रवासी मजदूरों की पीड़ा और उनपर किए जा रहे, गोरे मालिकों के जुल्मों की दास्ताँ को अभिव्यक्त किया है।

अभिमन्यु अनत जी का यह स्पष्ट मानना है कि लम्बे खुनी और राजनीतिक संघर्ष के बाद यूरोप में दास प्रथा की समाप्ति के बाद, जब साम्राज्यवादियों को अपने उपनिवेशों में मजदूरों की आवश्यकता महसूस हुई, तब इनकी नजर भारत, चीन और अफ्रीकी प्रायद्वीप के लोगों पर पड़ी। इन्होंने इन देशों के लोगों को झूठे प्रलोभन देकर मॉरीशस जैसे उजाड़ द्वीपों पर लेकर गये। वे लिखते है कि "दास प्रथा के उन्मूलन के बाद गिरमिटिया मज़दूरों की भर्ती का यह सिलसिला नई दास– प्रथा की शुरुआत थी | काला पानी की उस दुर्गम और दर्दनाक यात्रा के छलावे में जो पहले भारतीय आए, वे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा दक्षिण भारत और महाराष्ट्र के लोग थे। पत्थरों के नीचे से सोना पाने की उम्मीद लिए वह काफिला मॉरीशस, त्रिनिदाद, फिजी, सूरीनाम तथा कुछ सुदूर प्रांतों तक पहुंचता रहा। रोजी रोटी की तलाश में निकले इन गिरमिटिया मज़दूरों की सबसे बड़ी संख्या मॉरीशस पहुंची"[4]। इन्हीं नव दासों की करुण चीत्कार तथा यातना शिविरों में जीकर, विभिन्न कष्टों को सहकर, शोषित और अपमानित होकर, नंगी पीठों पर गोरों के कोड़ो की मार खाकर, गन्ने के खेतों की सिचाई अपने खून एवं पसीनों से करके, अपने को जीवित रखा। मॉरीशस में अपने पूर्वजों द्वारा सहे गए इन्हीं यातनाओं को ह्रदय की गहनतम अनुभूति बनाकर लेखक ने 'खामोशी के चीत्कार' संग्रह की कहानियों में अभिव्यक्त किया है। इसमें भारतीय मजदूरों के सुख – दुःख, खेत – खलिहान, धर्म – संस्कृति, अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष, अपने अस्मिता को बचाए और बनाए रखने के संघर्ष की अभिव्यक्ति की गई है।

अभिमन्यु अनत पराधीन मॉरीशस के भारतीय समाज की तस्वीर ही प्रस्तुत नहीं करते बल्कि स्वाधीन मॉरीशस में प्रवासी भारतीय समाज को किस – किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसकी भी अभिव्यक्ति करते है। 'वह बीच का आदमी' कहानी संग्रह इस दृष्टि से अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए, 'वह बीच का आदमी' कहानी को ही ले जिसमें आधुनिक मॉरीशस के विकास के लिए सरकार द्वारा उन्हीं जमीनों का अधिग्रहण किया जाता है। जहाँ वर्षों की यातना और पीड़ा को सहकर; मजदूरों ने अपने लिए झोंपड़ी का निर्माण किया था। आज विकास के नाम पर उसे ही तोड़ा जा रहा है ।

ऐसा ही एक मजदूर है रामचरित्तर जो गन्ने के खेतों में काम करता है। थोड़ी ही दूरी पर मजदूरों का मुहल्ला है। जिसमें उसका भी घर है। अब एयरपोर्ट बनाने के लिए उस जमीन का अधिग्रहण किया जा रहा है। बहुत से लोगों ने भय से अपनी जमीनें दे दी, उन्हें कुछ उसका मुआवजा मिल गया। लेकिन वे अपने जमीन से बेदखल हो गए। रामचरित्तर अपना घर नहीं देना चाहता। फ्रांसीसी 'बीच का आदमी' उससे कई बार मिल चुका है। उसे भी कई तरह से डराया धमकाया जा रहा है ट्रैक्टर नुमा बुलडोजर से सभी के घर ढहाए जा रहे है, "उसी गड़गड़ाहट के बीच मुंडेर के उस पार की ईखों की कतार से, भगतवा ने उसे फिर से कहा, 'राम भैया मैं फिर कहता हूँ कि तुम नाहक जिद किए बैठे हो। इज्जत से झुक जाना, बेइज्जत होकर झुकने से बेहतर होता है। तुम जमीन दे दो और दूसरी ले लो "[5]। इस पर रामचरित्तर जो भगतवा से कहता है, वह विचारणीय है। इससे पता चलता है कि जिस प्रकार किसी भी आम भारतीय को अपने जमीन से प्यार होता है, उसी प्रकार का प्रेम रामचरित्तर को भी भूमि के उस टुकड़े से है। उसे इतना लगाव क्यों है ? क्योंकि "जिन मेड़ो को मशीन तोड़ रही थी, उनके एक–एक पत्थर को जमीन के नीचे से निकालकर मिट्टी को उपजाऊ बनाने का साहस भरा कार्य किया था – उसके और उसके साथियों के उन पूर्वजों ने, जिन्हें पत्थर उलाटकर सोना पाने का प्रलोभन देकर इस द्वीप में घसीट लाया गया था"[6]। रामचरित्तर उस घर को अपने पूर्वजों की याद और उनकी छत्र छाया मानता है। उसकी संवेदना उस भूमि के टुकड़े से जुड़ी हुई है। उसके आस – पास टूटे हुए मेड़ 'सैकड़ों भारतीय कुली – मजदूरों के टूटे हुए पाँव, कटी हुई बाँहों के स्मारक थे'। कई तरह की मार्मिक संवेदनाएं उस मिट्टी से लोगों की जुड़ी हुई है। जमीन के इस टुकड़े का इंतजाम बड़ी मुश्किलों का सामना करने के बाद हो पाया है।

ऐसा नहीं है कि रामचरित्तर के आस – पास की भूमि लेने के अलावा उनके पास और कोई विकल्प नहीं है। इन घरों के उस पार दूर तक फैले हुए घने जंगल है। गोरे इंजीनियर के साथ वाला व्यक्ति उसे बता भी रहा है कि 'क्षेत्र को थोड़ा – सा उस दूसरी ओर के जंगल की ओर खींच देने से ये बाईस घर बच सकते थे'। लेकिन "घनी मूंछों वाला वह दूसरा अफसर इसके लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। उनका कहना था कि नक्शा जो तैयार था, उसी के आधार पर काम होगा। आधा मील तो दूर वह तो एक इंच हटने को तैयार नहीं था । और यहीं से शुरू हुई थी रामचरित्तर की लड़ाई। अगर उस दूसरी ओर विस्तृत जंगल न होकर, उसके अपने गांव की तरह कोई दूसरा गांव होता तो वह कभी अपने हठ पर अड़ा नहीं रहता"[7]। इसके पीछे की मानसिकता को बहुत ही सहजता से समझा जा सकता है। भारतीय समुदाय को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए हमेशा ही संघर्ष रत रहना होता है ।

आजाद मॉरीशस में भी कई प्रकार के भेद – भावों का सामना, भारतीय समुदाय को आज भी करना पड़ता है। इस कहानी के संबंध में कमल किशोर गोयनका ने ठीक ही लिखा है कि "लेखक किसान के भूमि प्रेम तथा भूमि के स्वामित्व पर शहरी संस्कृति के आक्रमण के बड़े प्रश्नों से भी जूझता है। इस संग्रह की कहानी वह 'बीच का आदमी' के नायक रामचरित्तर का भूमि रक्षा का संघर्ष हमें प्रेमचंद के उपन्यास 'रंगभूमि' के नायक सूरदास तथा 'गोदान' के होरी राम की याद दिला देता है। प्रेमचंद के ये पात्र गुलाम भारत में भूमि – रक्षा के संघर्ष में पराजित होते हैं। परन्तु रामचरित्तर की पराजय स्वतंत्र मॉरीशस में होती है"[8]। रामचरित्तर जैसे अनेक प्रवासी भारतीयों की पीड़ा और संघर्ष अभिमन्यु अनत की कहानियों में व्यक्त हुआ है। इन कहानियों के माध्यम से लेखक प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को, अपने देश ही नहीं, बल्कि वैश्विक पटल पर लोगों के बीच में ले जाते है। और समूचे वैश्विक समाज को इसके प्रति जागरूक और संवेदनशील बनाते है।

अभिमन्यु अनत द्वारा लिखित एक ऐसी ही महत्वपूर्ण कहानी 'मातमपुरसी' है। जिसमें आजाद मॉरीशस में आम आदमी कि स्थिति का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया गया है। फिलिप अपने परिवार के साथ दाउद मियां के मकान में किराए पर रहता है।

परिवार में इतनी गरीबी है कि लोग जो बचा हुआ खाना कुत्तों के आगे फेंक देते है। मारियों उन्हें उठा कर खा लेता है। मारियों अपने पिता फिलिप के साथ लोगों के घर मातमपुरसी के अवसर पर, रतजगा करने के लिए जुआ खेलाने जाता है। जिससे कुछ पैसे मिल जाते है, कभी नहीं भी मिलते है।

फिलिप हमेशा मारियों से कहकर जाता कि रेडियो पर शोक समाचार सुनकर उसमें से मरनेवालों के घर का पता नोट कर लेना। जिससे रात को वहां जाया जा सके। मारियों इस शोक समाचार को बड़े ध्यान से सुनता और आस – पास मरने वालों का पता नोट कर लेता। जिससे की वहां जुआ खेलने के लिए जाया जा सके। भारतीय समाज और यहाँ रहने वालों के लिए यह बहुत अजीब बात हो सकती है। यह सब मॉरीशस तथा वहां के अन्य समाजों में बहुत ही आम बात है। वहाँ मृत्यु के अवसर पर भी जुआ के माध्यम से लोग कुछ लाभ अर्जित कर लेना चाहते है। भारतीय और पाश्चात्य समाज और संस्कृति में यह बहुत बड़ा फर्क है। एक बार दाउद मियां ने फिलिप से कहाँ भी था कि 'यह तुम लोग क्या धंधा करते हो , किसी के यहाँ मैय्यत पड़ी हुई होती है और तुम मरनी के उस दुखद मौके पर लोगों से जुआ खिलवाते हो'। इस पर फिलिप कहता है –

"हम तो मरी के घर में दुखी लोगों का साथ देते है। मरनी अगोरते है"।
" मातमपुरसी के मौके पर जुआ खेलकर ? "

रात जागकर और लोगों से जगवा कर ! लोग तो बस एक दो घंटे ठहरते हैं और चेहरे दिखाकर चले जाते हैं। सुबह तक तो वे लोग ठहरते हैं, जो हमारे ईर्द – गिर्द दांव लगाने में मस्त होते हैं। कई बार तो ऐसा भी होता है लाश के ईर्द – गिर्द बैठे रिश्तेदार तक खर्राटे लेने लगते हैं। बस हम लोग होते हैं और हमारे साथ अपनी किस्मत आज़माने वाले, जो सूरज के उदय होने तक जागे के जागे रहते हैं"[9]। यहाँ लेखक ने फिलिप के द्वारा पश्चिमी समाज की संवेदन हीनता और उस समाज के यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। यह कार्य मात्र फिलिप ही नहीं करता है। बल्कि उस समाज में ऐसे छोटे मोटे असंख्य समूह है। जो यहीं कार्य करते है।

यह कार्य गरीबी और बदहाली से पीड़ित लोगों के लिए अपना परिवार चलाने का एक संबल है। जब कोई समाज नैतिक एवं सामाजिक दृष्टि से पतनशील होता है, तब इस तरह की संवेदन हीन संस्कृति का निर्माण करता है। इस कहानी में लेखक भारतीय समाज और पश्चिमी समाज की सांस्कृतिक स्थिति को स्पष्ट करते है। एक दिन फिलिप के घर के पास कोई नहीं मरा। फिलिप और मारियों को बस पकड़ कर थोड़ा दूर जाना पड़ा। यहाँ एक भारतीय समुदाय के यहाँ किसी की मृत्यु हुई थी। फिलिप और मारियों की तरह ही शहरों से जुआ खिलानेवालों की अन्य टोलियाँ भी वहां आ गई। "कुछ ही देर बाद पंडाल में सौ तक लोग आ गये थे और आधे से अधिक लोग उन तीनों मेजों को घेरे हुए बैठे और खड़े थे। जिन पर दांव लगाए जाने वाले थे। बाकी लोग अलग – अलग झुंड में बैठे अलग – अलग बातों में लगे रहे। कुछ युवकों ने आवाज देनी शुरू की 'कोमांसे से दो कोमांसे' खेल शुरू हो जाए"[10]। तभी घर के भीतर से सफ़ेद कमीज और धोती पहने एक व्यक्ति उस घर से बाहर आये और विनती भरे शब्दों में कहा – "देखिए मैं आप सभी लोगों से विनती कर रहा हूँ। हमारे घर के भीतर मेरी माँ का शव है, हम लोग उसकी आत्मा की शांति के लिए वेद – मंत्रों का पाठ कर रहे हैं। मेरे पिताजी का यह आदेश है कि हमारे घर इस दुखद मौके पर जुआ न खेला जाये। आप लोग बुरा न मानें। इसे तत्काल बंद कर दें"[11]। जब दूसरी बार उस अधेड़ व्यक्ति ने लोगों से यहीं विनती दुहराई तब लोग जुए के मेजों से उस व्यक्ति को भला बुरा कहते हुए हट गये। धीरे – धीरे पंडाल खाली हो गया। वहां उस घर के परिवारवालों के अलावा कोई और नहीं रह गया। क्योंकि वहां मातमपुरसी के लिए नहीं, लोग जुआ खेलने के लिए आए हुए थे। यह बहुत बड़ा फर्क है – भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति और संवेदना में।

अभिमन्यु अनत ने आजाद मॉरीशस में फैले गरीबी, अत्याचार, शोषण, भ्रष्टाचार को अपनी कहानियों के द्वारा चित्रित किया है। इनकी कहानियां अतीत से वर्तमान तक की यात्रा तय करती है। इस कारण से वे अपने समाज को सम्पूर्णता में देख सके है। ऐसी ही एक कहानी 'टूटा पहिया' है जिसमें वर्तमान मॉरीशस की विसंगतियों को लेखक ने चित्रित किया है। भयवा यूसुफ पच्चास से ऊपर के व्यक्ति है। आधुनिक मोटर वाहनों के यातायात में आ जाने से अब उनका तांगा सड़कों पर नहीं चलता। "क्योंकि शहर की नगरपालिका से उसे चिट्ठी मिली थी। वहाँ पहुंचने पर उससे कहा गया था कि शहर में आधुनिक यातायात बढ़ जाने के कारण, अब सड़कों पर गाड़ी और तांगे नहीं चल सकते"[12]। यह कहे कि सरकारी आदेश से उनके तांगे को जबरन सड़कों पर से हटा दिया गया था। वे बहुत ही स्वाभिमानी व्यक्ति है | उनको सरकार द्वारा वृद्धावस्था भत्ता दिये जाने का ऐलान हुआ। लेकिन अपने स्वाभिमानी प्रकृति के चलते उन्होंने उस भत्ते को कभी नहीं लिया। वे बहुत जिंदादिल और भारत प्रेमी व्यक्ति है। अपने जीवन काल में उन्होंने तांगे से, अपने आस – पास के लगभग सभी लोगों की मदद की थी। वह किसी के आगे हाथ फैलाना नहीं चाहते थे।

सड़कों से तो उनके तांगे को तो हटा दिया गया था लेकिन विभिन्न नुमाइश बाजी वाली जगहों पर तांगे को रक्खा गया था। अतीत से वर्तमान तक यातायात के साधनों का इतिहास बताने के लिए यह दृश्य सरकारी तंत्र के दोहरे चरित्र को बताता है। एक तरफ तो लोग बेरोजगार हो रहे है, दूसरी ओर दिखावे का नाटक किया जा रहा है। भयवा यूसुफ ने किसी के सामने कभी हाथ नहीं फैलाया। वह खुदा से यही दुआ करता था कि "खुदा ..... मेरा अपना सफ़र दम सिक्कों के खत्म होने से पहले ही पूरा हो जाये, इतनी ही ख्वाहिश रखता हूँ"[13]। होता भी कुछ ऐसा ही है। जो बहुत मार्मिक है। जो पश्चिमी समाज का बहुत क्रूर चेहरा है। दो लम्बे – लम्बे बालों वाले गोरे लोग आते है। एक उसकी दाढ़ी खींचता है और दूसरा उसके मुँह पर सिगरेट का कस छोड़ते हुए कहता है 'लोगे एक दम'–

"क्या चाहिए तुम्हें ?"
"महारानी एलिजाबेथ की तस्वीर"
"मेरे पास महारानी की तस्वीर क्या करने लगी!"
"दे ते हो या नहीं?"
पर भाई, मेरे पास तस्वीर हो तब तो दूँ ?"

बकते हो, साले ! आजादी के दस साल बाद भी रानी की तस्वीर ही सभी कुछ हैं"[14]। वह ठीक ही कह रहा था | नोटों पर तो महारानी की ही तस्वीर थी। जिसकी तस्वीर उसका राज्य। इस तरह से इनके लात घूसों को सहते हुए, भयवा यूसुफ वही अपना दम तोड़ देता है। इस तरह की नस्लीय हिंसा और अत्याचार आजाद मॉरीशस का कड़वा सच है।

अभिमन्यु अनत आजाद मॉरीशस में फैले भ्रष्टाचार को 'अस्वीकार' कहानी में प्रमुखता से व्यक्त करते है। स्वाधीनता संग्राम के दिनों में लोगों ने आजाद मॉरीशस का जो स्वप्न देखा था। वैसा कुछ भी उन्हें यथार्थ में नहीं मिला। शासन – सत्ता में हर जगह भ्रष्टाचार फैला हुआ है। दिनों – दिन महंगाई बढ़ती जा रही है। आम –आदमी का जीवन बदतर है। बिना घूस दिए कोई काम नहीं होता है। समुद्री तटों पर जो लोग अपना छोटा – मोटा रोजगार किया करते थे। सरकार ये तट बड़े – बड़े पूंजीपतियों

को देती जा रही है। जो यहाँ विशालकाय होटल खोलेंगे और इन छोटे व्यापारियों को यहाँ से बाहर कर देंगे। इस कहानी से ऐसा लगता है कि पत्रकार के रूप में लेखक यहाँ स्वयं मौजूद है। पत्रकार के रूप में लेखक बहुत से लोगों के बीच सर्वेक्षण करता है। विभिन्न विषयों पर प्रश्न करता है और लोग भी उससे प्रश्न पूछते है –

"आप पत्रकार हैं – मैं आपको जानता हूँ। आप मेरे एक प्रश्न को अपने पत्र में ला सकते हैं?"
"कैसा प्रश्न ?"
"हमारे समुद्र – तटों पर अभी और कितने होटल बनने हैं"
"मुझे क्या पता ?"
" आपको ऐसा नहीं लगता कि कुछ दिनों में एक – दो बचे हुए तट भी कटीले तारों से घेर लिए लायेंगे !"[15]

इसी तरह एक युवक से उन्होंने प्रश्न किया –

"क्यों दोस्त, इस तरह उदास क्यों हो ? नौकरी नहीं मिली ?"
"तुम दे रहे हो"
"मिल जाएगी । धीरज के साथ प्रयत्न जारी रखो"।
"आप कोई राजनेता है क्या ?"[16]

यह बहुत ही व्यंग्यात्मक है। यहाँ लेखक ने राजनीतिक तंत्र में फैले भ्रष्टाचार को यथार्थ रूप में व्यक्त किया है। पत्रकार का दोस्त अनवर है, जो खुद नौकरी करना चाहता है। लेकिन उससे घूस माँगा जा रहा है। पत्रकार उसे समझाता है कि हम घूस नहीं देंगे। इसके खिलाफ आन्दोलन करेंगे। शिकायत करेंगे। लेकिन अनवर जानता है कि यह सब व्यर्थ है। इसलिए अनवर घूस के सात सौ रुपए देने के लिए तैयार हो जाता है। अनवर कहता है कि 'बेबसी आदमी को क्या नहीं कराती' इस पर उसका पत्रकार मित्र कहता है कि "बेबसी आदमी को बहुत कुछ कराती हो पर इस बेबसी से अनर्थ कर चुकने के बाद आप की क्या स्थिति होगी। एक तो आप खरीदी हुई नौकरी के बल अपना जीवन गुजारेंगे, जिससे किसी दूसरे का जो कि आप से भी ज्यादा योग्य हो हक मारा जायेगा। दूसरी बात यह है कि आप इन अनर्थों के खिलाफ़ बोलने वाले होकर आज उसको बढ़ावा देने जा रहे हो ?"[17]। लोग सब कुछ जानते हुए भी मजबूर होकर भ्रष्टाचारियों की बातों को मानने के लिए विवश है। यह आजाद मॉरीशस की सबसे कड़वी सच्चाई है ।

निष्कर्ष

इस तरह के अनेकों दृश्य अभिमन्यु अनत की कहानियों में देखें जा सकते है। इन्होंने अपनी कहानियों में बहुत ही सूक्ष्मता से मॉरीशस के अतीत और वर्तमान का सामाजिक दस्तावेज प्रस्तुत किया है। भारतीय संस्कृति और मूल्यबोध इस कार्य में इनकी चेतना का निर्माण करती है। इसी चेतना को हृदय में रखकर इनकी बुद्धि सामाजिक अन्वेषण की ओर उन्मुख होती है। इस अन्वेषण में जहाँ कहीं वे मनुष्य को गुलाम और किसी भी प्रकार के बन्धनों में बंधा हुआ पाते है, तो वह अपने लेखन के माध्यम से उसके खिलाफ लड़ाई लड़ते है। "यह लड़ाई शब्द – शस्त्र से होती है। वह शब्दों से अमानवीय परिस्थितियों का विरोध करते हैं और अपने देश के इतिहास, भूगोल, प्रकृति, धर्म, संस्कृति, भाषा, सत्ता, समाज, स्त्री – पुरुष आदि सभी पर प्रश्न करके मनुष्य और मनुष्यता के कल्याण के लिए मूलभूत उपादानों की खोज करते हैं"[18]। जिससे मानव मुक्ति के स्वप्न को साकार किया जा सके। मनुष्य को सभी प्रकार की दासता और तानाशाही से मुक्ति दिलाई जा सके। रंग, जाति, नस्ल, भाषा, देश आदि के आधार पर जहाँ कहीं भी भेद – भाव किया जाता है। उसे समाप्त कर, सभी के सामान अधिकारों और मुक्ति के विराट स्वप्न को साकार किया जा सके। इस तरह से वे 'जन मुक्ति' के लेखक है। यही मुक्ति की विराट आकांक्षा इनकी कहानियों की मूल संवेदना है।

सन्दर्भ

1. प्रवासी साहित्य कितना प्रवासी – सुरेश ऋतुपर्ण – हिंदी प्रवासी साहित्य – सं. कमल किशोर गोयनका – पृष्ठ 64
2. वही – पृष्ठ 64
3. अभिमन्यु अनत एक बातचीत – डॉ. कमल किशोर गोयनका – पृष्ठ 56
4. प्रवासी – दिवस – कितना प्रवासी – अभिमन्यु अनत – हिंदी प्रवासी साहित्य –सं. कमल किशोर गोयनका – पृष्ठ 52
5. मॉरीशस कि हिंदी कहानियाँ – चयन एवं सम्पादन कमल किशोर गोयनका – पृष्ठ 89
6. वही – पृष्ठ 89
7. वही – पृष्ठ 93
8. हिंदी का प्रवासी साहित्य – कमल किशोर गोयनका – पृष्ठ 181
9. मॉरीशस कि हिंदी कहानियाँ – चयन एवं सम्पादन कमल किशोर गोयनका – पृष्ठ 78
10. वही – पृष्ठ 82
11. वही – पृष्ठ 84
12. वही – पृष्ठ 67
13. वही – पृष्ठ 71
14. वही – पृष्ठ 74
15. वही – पृष्ठ 48
16. वही – पृष्ठ 49
17. वही – पृष्ठ 55
18. हिंदी कस प्रवासी साहित्य – कमल किशोर गोयनका – पृष्ठ 191